PAPER-C.5

* वैदिक शिक्षा * अर्थ * परिभाषा * उद्देश्य * विशेषता

Introduction:- शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास, सामाजिक तथा राष्ट्रीय प्रगति और संस्कृति के उत्थान के लिए अनिवार्य है। विश्व जिस समय अपनी आवश्यकताओं में डूबा था, तथा उसमें असभ्यता व्याप्त थी उस समय हमारे देश की शिक्षा पद्धति (System of Education) पूर्णतः (विकास - सभी क्षेत्र में) सर्वांगीणता धार्मिक, सांस्कृतिक ज्ञान को अपना लक्ष्य बनाये हुई थी। उस समय भी हमारे देश की सभ्यता व संस्कृति विश्व के शिखर पर विद्यमान थी। उसी को हम वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली या प्राचीन शिक्षा प्रणाली के नाम से जानते हैं।

(वैदिक शिक्षा का काल)

* **Period of Vedic System of Education:-** वैदिक शिक्षा का प्रारम्भ वेद के रचना काल जो लगभग 2500 ई० पूर्व से लेकर बौद्ध धर्म के उदयकाल जो लगभग 500 ई० पूर्व तक है, को माना जाता है, इस दौरान जो शिक्षा प्रणाली विद्यमान थी उसे वैदिक शिक्षा का काल कहते हैं। इस समय की शिक्षा केवल पुस्तकों के ज्ञान तक सिमित नहीं थी, बल्कि सादा जीवन उच्च विचार के आधार पर शिक्षा की व्यवस्था थी।

* **Meaning and Definition of Vedic Edu. (परिभाषा एवं अर्थ):-**

1. Broader Meaning (व्यापक अर्थ)
2. Narrow Meaning (संकुचित अर्थ)

P.T.O

Scanned with CamScanner

(i) व्यापक अर्थ :- इसका संबंध जीवन पर्यन्त चलने वाली शिक्षा से था, जो मनुष्य के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ उसे सक्षम बनाती थी। इस प्रकार मनुष्य जीवन भर छात्र ही रहता था।

(ii) संकुचित अर्थ :- वैदिक शिक्षा जो औपचारिक होती थी, क्योंकि बालक को जीवन के शुरू के कुछ साल आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य (शादी नहीं करना) का पालन करना पड़ता था और गुरु से ज्ञान प्राप्त करना था।

अतः उपरोक्त विवेचनाओं से स्पष्ट है की प्राचीन भारतीय विचार धारा तथा जीवन पूरी तरह धर्म से ओतप्रोत थी। वेद, भारतीय शिक्षा के मूल स्रोत माने जाते थे, इसलिए हमारी प्राचीन शिक्षा प्रणाली के प्रमुख आधार वेद थे।

* Aims of Vedic Education: (उद्देश्य)

1. ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता (Infussion of Spirit of piety & Religioness)
2. चरित्र निर्माण (formation of Chasacter)
3. व्यक्तित्व का विकास (Personality Development)
4. नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन (Inculation of Civics & Social Duties)
5. संस्कृति का संरक्षण (Preservation of Culture)
6. सामाजिक कुशलता में वृद्धि (Promotion of Social efficiency)
7.

Scanned with CamScanner

1. **ईश्वर भक्ति तथा धार्मिकता** :- वैदिक काल में धर्म को केंद्र में रखकर उसी आधार पर शिक्षा प्रदान की जाती थी। प्रायः प्रायः शिक्षक होते थे, और वह छात्रों को ईश्वर भक्ति तथा धर्म के नियमों का कठोरता से पालन कराते हुए शिक्षा प्रदान करते थे और इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए विभिन्न संस्कारों की व्यवस्था थी। इसलिए गुरुकुल का वातावरण धार्मिक होता था।

2. **चरित्र निर्माण** :- वैदिक कालीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के चरित्र का निर्माण करना था। वैदिक आदर्शों के आधार पर ब्रह्मचर्य का पालन सदाचार व उच्च विचार आदि का पालन करके इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।

3. **व्यक्तित्व का विकास** :- वैदिक कालिन शिक्षा का तीसरा उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का विकास करना था। छात्रों में आत्म विश्वास, संयम, सम्मान, विवेक का प्रयोग कर उनको जान सके और इस आधार पर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सके।

4. **नागरिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन** :- वैदिक कालिन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य ब्रह्मचारियों में नागरिक तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन करने योग्य बनाना भी था। आश्रम के पश्चात गृहस्थ जीवन की भावना का विकास किया जाता था कि वे समाज में एक सामाजिक प्राणी के रूप में रहकर अपने दायित्व को समझते हुए किस प्रकार का कार्य करना है कि शिक्षा दी जाती थी।

5. **संस्कृति का संरक्षण** :- वैदिक कालीन शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण एवं उसका प्रसार करना भी था। बालकों को इस प्रकार की शिक्षा दी जाती थी कि वे अपनी संस्कृति और साहित्य का संरक्षण कर सकें।

6. **सामाजिक कुशलता में वृद्धि** :- वैदिक कालिन शिक्षा में बालक को जीविकार्जन संबंधी व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था ताकि वह अपने भावी जीवन को सुचारु रूप में चलाने में समर्थ हो सकें इसलिए छात्र अपने परिवार की व्यवसाय में कुशलता प्राप्त कर केवल अपने

P.T.O

Scanned with CamScanner

परिवार तथा समाज के लिए ही नहीं बल्कि राष्ट्र कल्याण के योग्य भी हो जाते है।

* **शिक्षक और शिक्षार्थी :-** वैदिक कालीन शिक्षा में गुरु और शिष्य का संबंध बहुत निकट का था। यहाँ इस वैदिक काल में शिक्षक और शिक्षार्थी का संबंध पिता - पुत्र के समान था। गुरु शिष्य की न केवल भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति और शिक्षा प्रदान करते थे, बल्कि वह अपना स्नेह और सहानुभूति भी उसे देते थे। गुरु के प्रति शिष्यों के निम्नलिखित कर्तव्य होते थे।

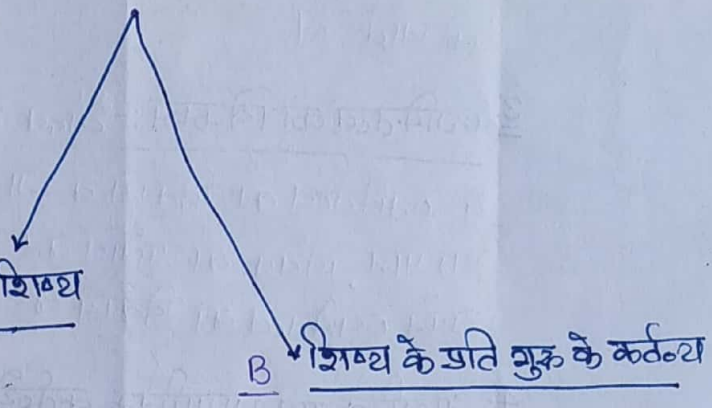

A. गुरु के प्रति शिष्य :-

(i) सुबह सबसे पहले गुरु का चरण स्पर्श करता था।
(ii) पूजा की सामग्री का प्रबंध करते थे।
(iii) आश्रम की गायों को चराते थे।
(iv) गुरु के खेत में काम करते थे।
(v) गुरु के गृहस्थी के छोटे बड़े कार्य करते थे।
(vi) गुरु के आदेश का पालन करना अपना कर्तव्य समझते थे।
(vii) गुरु के लिए भिक्षा माँगते थें।
(viii) (ix) गुरु को गौरवपूर्ण स्थान देते थे।

B. शिष्य के प्रति गुरु के कर्तव्य :-

(i) गुरु शिष्य का संबंध पिता - पुत्र के समान था।
(ii) शिष्यों के सुख-दुख का ख्याल रखना।

Scanned with CamScanner

(iii) छात्रों की जिज्ञासा को शांत करना।
(iv) छात्रों को भावी जीवन के लिए तैयार करना।
(v) शिष्यों की समस्याओं का समाधान करना।
(vi) छात्रों को बुरी आदतों से दूर करना।
(vii) स्वस्थ की देखभाल करना, चरित्र विकास करना।
(viii) छात्रों में आदर्श गुणों का विकास।

* छात्रों का दैनिक जीवन का नियम (Daily life of Student) :-

(i) प्रातः काल उठना। [Early Rising] - सूरज उगने से पहले उठना।
(ii) प्रार्थना। [Pray] - चरण स्पर्श कर, सुबह-शाम प्रार्थना।
(iii) स्नान। [Bath] नींद को भगाने के लिए स्नान करना।
(iv) खान-पान। [food] दो बार खाना था पूरे दिन में, मांस, शराब, पान वाला न खाना।
(v) वेश-भूषा। [Dress] ब्रह्मण - काले मृग, क्षत्रिय चित्तेदार मृग एवं वैश्य बकरे की खाल पहनते थे।
(vi) आचार व्यवहार। [
(vii) आदतों में सादगी [Simplicity of Habits] सभी जातिधर्म को समान रहना था।
(viii) नैतिक अनुशासन। [Moral Discipline]
(ix) अविवाहित जीवन। [Brahmacharya]
(x) दण्ड। [Punishment]

* शिक्षा व्यवस्था (System of Education) :-

वैदिक शिक्षा प्रणाली को समझने के लिए निम्न बिंदुओं पर विचार करना आवश्यक है।

(i) निःशुल्क शिक्षा :- इस समय में गुरु के आश्रम में जो बालक आते उन्हें निःशुल्क शिक्षा दी जाती थी, मगर शिक्षा उपरांत छात्र का कर्तव्य था कि वह गुरु दक्षिणा दे।

(ii) शिक्षा संस्थाएँ :- शिक्षण कार्य गुरुकुल, पर्ण आश्रम में रहकर छात्रों को शिक्षा देते थे। अतः वैदिक काल में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अधिक प्रचलित थी।

P.T.O

Scanned with CamScanner

(iii) पाठ्यक्रम :- वैदिक काल में वेदों की शिक्षा के अतिरिक्त दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष तथा तर्क विज्ञान को उच्च स्थान दिया जाता था।

(iv) शिक्षण विधि :- वैदिक काल में शिक्षण विधि मौखिक थी और यह गुरु द्वारा बताई गई सभी बातों को याद करते थे।

(v) परीक्षा-प्रणाली :- परीक्षा प्रत्येक दिन नये पाठ पढ़ाने से पूर्व ली जाती थी।

(vi) स्त्रीशिक्षा :- वैदिक काल में स्त्रीयों को शिक्षा प्राप्त करने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। बालिकाओं को साहित्य, नृत्य, संगीत, काव्य रचना, दर्शन आदि विषयों की शिक्षा दी जाती थी।

(vii) व्यवसायिक शिक्षा - वैदिक कालीन शिक्षा में धर्म के अतिरिक्त प्रत्येक बालक को उसकी इच्छा के अनुसार व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जाती थी। ताकि बालक अपने गृहस्थ जीवन को सुचारु रूप से चला सकें।

Conclusion :-

Scanned with CamScanner

SHAKUNTALAM INSTITUTE OF TEACHERS EDUCATION

KIRHINDIH, KUMHAU STATION ROAD, SHIVSAGAR

COURSE NAME – B.Ed. **SESSION** – 21-23

SUBJECT - C-5

TOPIC NAME – Vedic Education

DATE - 02.02.2022

Scanned with CamScanner